



प्रभु वंदना

॥ ऋषभदेव स्तुति ॥

जिनेशईदं नृपनाभिचंदं, सुरैद्वंदं रिषभं जिणिंदं।
दमिंदसंदं शिवसुखस्वकंदं, नमाभि नंदं पढमं दिणिंदं॥

हे परमानंदी परमात्मा!

आप थे प्रथम राजेश्वर, आप थे प्रथम मुनीश्वर, आप थे प्रथम तीर्थेश्वर,
आप श्री ने साधना के द्वारा अनुपम त्रिपदी जगत को प्रदान की है,

बाह्य राजवैभव का त्याग कर मुनि बने,
साधना के द्वारा आभ्यन्तर परिग्रह का त्याग कर

स्वयं में स्थित वीतरागता को प्रगट की,

यही मनुष्य जन्म की सार्थकता है।

बस! इस पथ के पथिक हम भी बने,

ऐसा शुभ भाव आपके आलम्बन से प्रगट हो।

इसलिए हम भव्य जिनालय में

आपका स्थापना निक्षेप कर रहे हैं।

पधारो... म्हारो ऋषभ बिराजे...



॥ पार्श्वनाथ स्तुति ॥

रुचितरं वरपार्श्वजिनेश्वरं, अशुभभाव-तमिस्रदिनेश्वरम्।
निखिल कर्मदलस्य विनाशनं, परमज्ञानसुष्ठयानवियोजनम्॥

हे पूर्णानंदी परमात्मा!

कमठ उपसर्ग कर रहा है, उसे वो उचित लग रहा है।

धरणेन्द्र पूजा कर रहा है, उसे वो उचित लग रहा है।

दोनों के प्रति समभाव रखना, यह आपको उचित लग रहा है।

आपकी समत्व साधना

हमें अद्भुत संदेश दे रही है।

गोक्ष हेतु समता अनिवार्य है,

यह बात निःशंक समझने जैसी है।

तुल्यमनोवृत्ति को धारण कर हम भी

निज स्वरूप का प्रगटीकरण कर सके,

इसी शुभ भावों से

आपका स्थापना निक्षेप कर रहे हैं।

